॥ श्री हनुमते नमः ॥

श्री हनुमान जी की आरती

पाठ गीता प्रेस, गोरखपुर के अनुसार

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥ टेक॥

जाके बल से गिरिवर काँपै।
रोग-दोष जाके निकट न झाँपै॥ १ ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई॥ २ ॥

दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सीय सुधि लाये॥ ३ ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥ ४ ॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियाराम जी के काज सँवारे॥ ५ ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि सजीवन प्रान उबारे॥ ६ ॥

पैठि पताल तोरि जम-कारे।
अहिरावन की भुजा उखारे॥ ७ ॥

बायें भुजा असुर दल मारे।
दहिने भुजा संतजन तारे॥ ८ ॥

सुर नर मुनि आरती उतारे।
जै जै जै हनुमान उचारे॥ ९ ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरति करत अंजना माई॥ १० ॥

जो हनुमान (जी) की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै॥ ११ ॥

पहली पंक्ति टेक है: आरती गाते समय इसे बाकी पंक्तियों के बाद दोहराया जाता है।